The Eternal Epic of Divine Mother
दुर्गा सप्तशती
DURGA SAPTASHATI
Chapter 12 : The Fruit of Devotion and Worship
अध्याय १२: फलस्तुति
Sin Destroyed
पापों का नाश
Prosperity
समृद्धि - धन-धान्य और पुत्र
Fearless
भयमुक्ति
Worship Completed
पूजा की पूर्णता
Healed
आरोग्य
Peace & Union
संगठन और शांति
Relics of Fear
भय के अवशेष
The Fruit of Reading and Devotion
देवी-चरित्रों के पाठ का फल
Path Complete
पाठ पूर्ण
Banish Darkness
अज्ञान का नाश
Relics of Fear
भय के अवशेष
Healer
रोगमुक्त
Released
मुक्त

Durga Saptashati

|| 'द्वादश अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

श्री दुर्गा सप्तशती - अध्याय १२ (फलस्तुति) का सारांश

अध्याय का नाम: देवी-चरित्रों के पाठ का माहात्म्य

सारांश:

यह अध्याय देवी माहात्म्य के पाठ और श्रवण के फल (लाभ) का वर्णन करता है। देवी स्वयं देवताओं से कहती हैं कि जो एकाग्रचित्त होकर प्रतिदिन इन स्तुतियों से उनका स्तवन करेगा, उसकी सारी बाधाएँ वह निश्चित रूप से दूर कर देंगी।

माहात्म्य श्रवण/पाठ के प्रमुख लाभ:

1. पापों का नाश: पाप और पापजनित विपत्तियाँ पास नहीं आतीं।
2. समृद्धि: दरिद्रता दूर होती है, धन-धान्य और पुत्र की प्राप्ति होती है।
3. भय मुक्ति: शत्रु, लुटेरे, राजा, शस्त्र, अग्नि और जल (तूफान) के भय से रक्षा होती है।
4. कल्याणकारी: यह परम कल्याणकारक है और महामारी, आध्यात्मिक आदि तीनों प्रकार के उत्पातों को शांत करता है।
5. देवी का वास: जहाँ प्रतिदिन विधिपूर्वक इसका पाठ होता है, वहाँ देवी का सदा सन्निधान बना रहता है।
6. पूजा की पूर्णता: बलि, पूजा, होम आदि के अवसर पर पाठ करने से, अनजाने में की गई त्रुटियों के बावजूद भी, देवी प्रसन्नता से सब कुछ ग्रहण करती हैं।
7. बाधाओं का शमन: बुरे स्वप्न, ग्रहजनित पीड़ाएँ शांत हो जाती हैं और दुःस्वप्न शुभ स्वप्न में बदल जाते हैं।
8. आरोग्य: यह आरोग्य प्रदान करता है।
9. संगठन और शांति: बालकों के लिए यह शांतिकारक है और मनुष्यों के संगठन में फूट होने पर मित्रता कराता है।
10. दैवी रक्षा: राक्षसों, भूतों और पिशाचों का नाश होता है। युद्ध, संकट, हिंसक पशुओं के आक्रमण, राजा के कोप, या तूफान से घिरे होने पर इसके स्मरण मात्र से मनुष्य संकट से मुक्त हो जाता है।

देवी का स्वरूप:

देवी बताती हैं कि वह नित्य होती हुई भी बार-बार प्रकट होकर जगत् की रक्षा करती हैं। वे ही विश्व को मोहित करती हैं, जन्म देती हैं, और प्रार्थना करने पर ज्ञान तथा समृद्धि प्रदान करती हैं। महाप्रलय के समय वे महाकाली का स्वरूप धारण करती हैं। मनुष्यों के अभ्युदय के समय वे घर में लक्ष्मी के रूप में स्थित होती हैं और अभाव के समय दरिद्रता बनकर विनाश का कारण होती हैं। उनकी स्तुति करने पर वे धन, पुत्र, धार्मिक बुद्धि और उत्तम गति प्रदान करती हैं।

अध्याय के अंत में ऋषि मार्कण्डेय बताते हैं कि देवी इतना कहकर अंतर्धान हो गईं, और देवताओं ने निर्भय होकर अपने अधिकार का पालन शुरू कर दिया।

Durga Saptashati
|| 'द्वादश अध्याय' ||

Chapter 12 :

देवी-चरित्रों के पाठ का माहात्म्य

॥ ध्यान ॥

मैं तीन नेत्रों वाली दुर्गा देवी का ध्यान करता (करती) हूँ, उनके श्रीअङ्गों की प्रभा बिजली के समान है। वे सिंह के कंधे पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती हैं। हाथों में तलवार और ढाल लिये अनेक कन्याएँ उनकी सेवा में खड़ी हैं। वे अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुए हैं। उनका स्वरूप अग्निमय है तथा वे माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करती हैं।

देवी बोलीं - देवताओ! जो एकाग्रचित्त होकर प्रतिदिन इन स्तुतियों से मेरा स्तवन करेगा, उसकी सारी बाधा मैं निश्चय ही दूर कर दूँगी।

जो मधुकैटभ का नाश, महिषासुर का वध तथा शुम्भ-निशुम्भ के संहार के प्रसङ्ग का पाठ करेंगे, तथा अष्टमी, चतुर्दशी और नवमी को भी जो एकाग्रचित्त हो भक्तिपूर्वक मेरे उत्तम माहात्म्य का श्रवण करेंगे —

उन्हें कोई पाप नहीं छू सकेगा। उन पर पापजनित आपत्तियाँ भी नहीं आयेंगी। उनके घर में कभी दरिद्रता नहीं होगी तथा उनको कभी प्रेमीजनों के विछोह का कष्ट भी नहीं भोगना पड़ेगा।

इतना ही नहीं, उन्हें शत्रु से, लुटेरों से, राजा से, शस्त्र से, अग्नि से तथा जल की राशि से भी कभी भय नहीं होगा।

इसलिये सबको एकाग्रचित्त होकर भक्तिपूर्वक मेरे इस माहात्म्य को सदा पढ़ना और

सुनना चाहिये। यह परम कल्याणकारक है।

मेरा माहात्म्य महामारीजनित समस्त उपद्रवों तथा आध्यात्मिक आदि तीनों प्रकार के उत्पातों को शान्त करने वाला है।

मेरे जिस मन्दिर में प्रतिदिन विधिपूर्वक मेरे इस माहात्म्य का पाठ किया जाता है, उस स्थान को मैं कभी नहीं छोड़ती। वहाँ सदा ही मेरा सन्निधान बना रहता है।

बलिदान, पूजा, होम तथा महोत्सव के अवसरों पर मेरे इस चरित्र का पूरा-पूरा पाठ और श्रवण करना चाहिये।

ऐसा करने पर मनुष्य विधि को जानकर या बिना जाने भी मेरे लिये जो बलि, पूजा या होम आदि करेगा, उसे मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ ग्रहण करूँगी।

शरत्काल में जो वार्षिक महापूजा की जाती है, उस अवसर पर जो मेरे इस माहात्म्य को भक्तिपूर्वक सुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा — इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

मेरे इस माहात्म्य, मेरे प्रादुर्भाव की सुन्दर कथाएँ तथा युद्ध में किये हुए मेरे पराक्रम सुनने से मनुष्य निर्भय हो जाता है।

मेरे माहात्म्य का श्रवण करने वाले पुरुषों के शत्रु नष्ट हो जाते हैं, उन्हें कल्याण की प्राप्ति होती तथा उनका कुल आनन्दित रहता है।

सर्वत्र शान्ति-कर्म में, बुरे स्वप्न दिखायी देने पर तथा ग्रहजनित भयंकर पीड़ा उपस्थित होने पर मेरा माहात्म्य श्रवण करना चाहिये।

इससे सब विघ्न तथा भयंकर ग्रह पीड़ाएँ शान्त हो जाती हैं और मनुष्यों द्वारा देखा हुआ दुःस्वप्न शुभ स्वप्न में परिवर्तित हो जाता है।

बालग्रहों से आक्रान्त हुए बालकों के लिये यह माहात्म्य शान्तिकारक है तथा मनुष्यों के संगठन में फूट होने पर यह अच्छी प्रकार मित्रता करानेवाला होता है।

यह माहात्म्य समस्त दुराचारियों के बल का नाश करानेवाला है। इसके पाठमात्र से राक्षसों, भूतों और पिशाचों का नाश हो जाता है।

मेरा यह सब माहात्म्य मेरे सामीप्य की प्राप्ति करानेवाला है। पशु, पुष्प, अर्घ्य, धूप, दीप,

गन्ध आदि उत्तम सामग्रियों द्वारा पूजन करने से, ब्राह्मणों को भोजन करानेसे, होम करने से, प्रतिदिन अभिषेक करने से, नाना प्रकार के अन्य भोगों का अर्पण करने से तथा दान देने आदि से एक वर्ष तक जो मेरी आराधना की जाती है और उससे मुझे जितनी प्रसन्नता होती है, उतनी प्रसन्नता मेरे इस उत्तम चरित्र का एक बार श्रवण करनेमात्र से हो जाती है। यह माहात्म्य श्रवण करने पर पापों को हर लेता और आरोग्य प्रदान करता है।

मेरे प्रादुर्भाव का कीर्तन समस्त भूतों से रक्षा करता है तथा मेरा युद्धविषयक चरित्र दुष्ट दैत्यों का संहार करनेवाला है।

इसके श्रवण करने पर मनुष्यों को शत्रु का भय नहीं रहता। देवताओ! तुमने और ब्रह्मर्षियों ने जो मेरी स्तुतियाँ की हैं, तथा ब्रह्माजी ने जो स्तुतियाँ की हैं, वे सभी कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं।

वन में, सूने मार्ग में अथवा दावानल से घिर जाने पर, निर्जन स्थान में लुटेरों के दाव में पड़ जाने पर या शत्रुओं से पकड़े जाने पर, अथवा जंगल में सिंह, व्याघ्र या जंगली हाथियों के पीछा करने पर, कुपित राजा के आदेश से वध या बन्धन के स्थान में ले जाये जाने पर अथवा महासागर में नाव पर बैठने के बाद भारी तूफान से नाव के डगमग होने पर,

और अत्यन्त भयंकर युद्ध में शस्त्रों का प्रहार होने पर अथवा वेदना से पीड़ित होने पर, किं बहुना, सभी भयानक बाधाओं के उपस्थित होने पर —

जो मेरे इस चरित्र का स्मरण करता है, वह मनुष्य संकट से मुक्त हो जाता है। मेरे प्रभाव से सिंह आदि हिंसक जन्तु नष्ट हो जाते हैं तथा लुटेरे और शत्रु भी मेरे चरित्र का स्मरण करनेवाले पुरुष से दूर भागते हैं।

ऋषि कहते हैं - यों कहकर प्रचण्ड पराक्रमवाली भगवती चण्डिका सब देवताओं के देखते-देखते वहीं अन्तर्धान हो गयीं। फिर समस्त देवता भी शत्रुओं के मारे जाने से निर्भय हो पहले की ही भाँति यज्ञ भाग का उपभोग करते हुए अपने-अपने अधिकार का पालन करने लगे।

संसार का विध्वंस करनेवाले महाभयंकर अतुलपराक्रमी देवशत्रु शुम्भ तथा महाबली निशुम्भ के युद्ध में देवी द्वारा मारे जाने पर शेष दैत्य पाताललोक में चले आये।

राजन्! इस प्रकार भगवती अम्बिका देवी नित्य होती हुई भी पुनः पुनः प्रकट होकर जगत् की रक्षा करती हैं।

वे ही इस विश्व को मोहित करतीं, वे ही जगत् को जन्म देतीं तथा वे ही प्रार्थना करने पर संतुष्ट हो विज्ञान एवं समृद्धि प्रदान करती हैं।

राजन्! महाप्रलय के समय महामारी का स्वरूप धारण करनेवाली वे महाकाली ही इस समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं।

वे ही समय-समय पर महामारी होती और वे ही स्वयं अजन्मा होती हुई भी सृष्टि के रूप में प्रकट होती हैं। वे सनातनी देवी ही समयानुसार सम्पूर्ण भूतों की रक्षा करती हैं।

मनुष्यों के अभ्युदय के समय वे ही घर में लक्ष्मी के रूप में स्थित हो उन्नति प्रदान करती हैं और वे ही अभाव के समय दरिद्रता बनकर विनाश का कारण होती हैं।

पुष्प, धूप और गन्ध आदि से पूजन करके उनकी स्तुति करने पर वे धन, पुत्र, धार्मिक बुद्धि तथा उत्तम गति प्रदान करती हैं।

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'फलस्तुति' नामक बारहवाँ अध्याय पूरा हुआ।

Durga Saptashati

|| Chapter Twelve ||

Chapter 12:

The Glory of Reciting the Deeds of the Goddess

॥ **Dhyana (Meditation)** ॥

I meditate upon Goddess Durga, who has three eyes, whose bodily lustre is like lightning, and who appears formidable, seated on the shoulder of a lion. Many maidens holding a sword and shield stand in her service. She holds a discus, mace, sword, shield, arrow, bow, noose, and the gesture of threat (Tarjani Mudra) in her hands. Her form is fiery, and she wears the moon as a crown on her forehead.

The Goddess spoke – O Devas (gods)! I will surely dispel all the troubles of anyone who, with a concentrated mind, daily praises me with these hymns.

Those who recite the narratives of the destruction of Madhu and Kaitabha, the slaying of Mahishasura, and the annihilation of Shumbha and Nishumbha, and those who, with a concentrated mind and devotion, listen to my excellent Mahatmya (glory) on the Ashtami (eighth), Chaturdashi (fourteenth), and Navami (ninth) days –

No sin will touch them. Sin-born calamities will not befall them. Poverty will never reside in their homes, nor will they ever have to endure the pain of separation from their loved ones.

Not only this, but they will also never fear enemies, robbers, the king, weapons, fire, or vast bodies of water.

Therefore, everyone should always read and listen to this Mahatmya of mine with a concentrated mind and devotion. It is supremely auspicious.

My Mahatmya pacifies all disturbances caused by epidemics and all three types of afflictions (spiritual, adhibhautika, and adhidaivika).

I never leave the place where this Mahatmya of mine is recited daily according to the prescribed method. My presence always remains there.

During occasions of offerings, worship, Homa (fire sacrifice), and festivals, this narrative of my deeds should be fully recited and heard.

By doing so, whatever offerings, worship, or Homa a person performs for me, whether knowingly or unknowingly, I accept them with great pleasure.

The person who listens to this Mahatmya with devotion during the annual great worship performed in the autumn season will be freed from all obstacles and become endowed with wealth, grain, and sons by my grace—there is not the slightest doubt about this.

By listening to my Mahatmya, the beautiful narratives of my manifestation, and my valor in battle, a person becomes fearless.

The enemies of the men who listen to my Mahatmya are destroyed, they attain welfare, and their family remains joyful.

My Mahatmya should be heard in all rites for peace, upon seeing bad dreams, and when terrible afflictions caused by planets arise.

By this, all obstacles and terrible planetary afflictions are pacified, and a bad dream seen by men is transformed into an auspicious dream.

This Mahatmya brings peace to children afflicted by Balagrahas (planetary afflictions affecting children) and is a great means of fostering friendship when there is discord among people.

This Mahatmya destroys the power of all wicked beings. Merely by its recitation, Rakshasas (demons), ghosts, and Pishachas (goblins) are destroyed.

All this Mahatmya of mine leads to the attainment of proximity to me. The satisfaction I gain from one year of worship performed with excellent materials such as animals, flowers, Arghya (offering of water), incense, lamps, and fragrance, feeding Brahmins, performing Homa, daily abhishek (ritual bathing), offering various other enjoyments, and giving donations—that same satisfaction is gained merely by listening to this excellent narrative of mine once. This Mahatmya, when heard, removes sins and grants health.

The narration of my manifestation protects one from all beings, and the narrative of my battle deeds destroys wicked Asuras (demons).

By listening to this, men do not fear the enemy. O Devas! The praises you and the great sages have offered to me, and the praises offered by Lord Brahma, all bestow auspicious intellect.

In a forest, on a desolate path, when surrounded by a wildfire, in a deserted place when cornered by robbers or captured by enemies, or when pursued by lions, tigers, or wild elephants in the jungle, when being led to the place of execution or imprisonment by the order of an enraged king, or when a boat is shaking severely due to a heavy storm after boarding it on the ocean, and when weapons are striking in an extremely terrible battle, or when afflicted by pain, or in short, whenever any terrible obstacle arises –

The man who remembers this narrative of mine is freed from the crisis. By my power, fierce creatures like lions are destroyed, and robbers and enemies also flee from the person who remembers my narrative.

The Rishi said – Having spoken thus, Goddess Chandika, possessing formidable valor, disappeared right there while all the Devas watched. Then, all the Devas, being fearless due to the destruction of their enemies, began to enjoy their shares of the sacrifice and carried out their respective duties as before.

When the excessively terrible, incomparably powerful enemies of the Devas, Shumbha and the mighty Nishumbha, who were intent on destroying the world, were slain by the Goddess in battle, the remaining Daityas (demons) retreated to the netherworld (Patala Loka).

O King! Thus, Goddess Ambika, though eternal, manifests again and again to protect the world.

She alone deludes this universe; she alone gives birth to the world, and she alone, when prayed to and satisfied, grants knowledge and prosperity.

O King! At the time of the great dissolution (Mahapralaya), she, in the form of Mahakali, embodying the great epidemic, pervades this entire universe.

She herself becomes the epidemic from time to time, and though unborn herself, she manifests in the form of creation. This eternal Goddess herself protects all beings according to the proper time.

At the time of men's prosperity, she resides in the house as Lakshmi (Goddess of Wealth) and grants advancement, and in times of lack, she becomes poverty and is the cause of destruction.

When worshipped with flowers, incense, fragrance, etc., and praised, she grants wealth, sons, righteous intellect, and the highest state (Moksha).

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the narrative of the Savarni Manvantara, the twelfth chapter named 'Phalastuti' (Eulogy of the Results) in the Devi Mahatmya is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool